International Journal of Home Science 2020; 6(2): 260-261

ISSN: 2395-7476
IJHS 2020; 6(2): 260-261
© 2020 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 20-03-2020
Accepted: 26-04-2020

श्रीमती कीर्ति पटेल
शोधार्थी, गृहविज्ञान, शा.क. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, विदिशा मध्यप्रदेश, भारत।

डॉ. रेखा श्रीवास्तव
विभागाध्यक्ष, गृहविज्ञान, शा.क. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, विदिशा मध्यप्रदेश, भारत।

Corresponding Author:
श्रीमती कीर्ति पटेल
शोधार्थी, गृहविज्ञान, शा.क. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, विदिशा मध्यप्रदेश, भारत।

सहरिया जनजाति की किशोर बालिकाओं की पोषणिक स्थिति एवं उनकी स्वास्थ्य समस्याएं

श्रीमती कीर्ति पटेल एवं डॉ. रेखा श्रीवास्तव

प्रस्तावना

''स्वस्थ तन में स्वस्थ मन का वास होता है'' यह तथ्य सभी व्यक्तियों पर लागू होता है। जब हमारा तन और मन दोनों स्वस्थ होंगे तो ही हम किसी काम को करने के लिए तत्पर होते हैं। विभिन्न शोध सर्वेक्षणों से यह ज्ञात हुआ है कि सहरिया जनजाति के लोग स्वास्थ्य के प्रति जागरूक नहीं हैं। सहरिया जनजाति की किशोरियों में लौहतत्व, रक्ताल्पता (एनीमिया), कुपोषण जैसी समस्याएं देखी जाती है।

सहरिया समुदाय में कुपोषण की समस्या व्यापक रूप से मौजूद। इस समस्या से किशोरियॉ ही नहीं अपितु सहरिया जनजाति की महिलाएँ एवं बच्चे भी अधिक संख्या में घिरे हुए हे। सहरिया आदिम जाति समूह आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त अल्प विकसित प्रिमिटिव आदिम समूह है। इस जनजाति में फैली अशिक्षा, अज्ञानता, अन्धविश्वास एवं प्रचलित परम्परागत मान्यताएँ, धार्मिक विश्वास, भाग्यवादिता, आर्थिक निर्धनता व पौष्टिक आहार के ज्ञान का अभाव आदि, कुछ ऐसे महत्वपूर्ण कारण है जिसके संयुक्त प्रभाव के फलस्वरूप स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।

सहरिया जनजाति की उत्पत्तिः– सहरिया जनजाति की उत्पत्ति की मूल अवधारणा सही रूप से अप्राप्त है। इसका न कोई इतिहास है न ही कोई पुरातत्वीय या धार्मिक संदर्भ। दन्त कथाओं एवं व्याख्यानों के आधार पर इनकी उत्पत्ति पर प्रकाश डाला जा सकता है– जो निम्न है–

''दो बहनें थी – बड़ी भालनी और छोटी का नाम सेरिया था, सेरिया विवाह के बाद मालवा चली गई जिसकी संतान ''सहरिया'' कहलाई और भालनी का विवाह राजस्थान में हुआ जिसकी संतानों ने ''भीलवाड़ा'' की स्थापना की इस प्रकार सहरिया और भील दो सगी बहनों की संतान है। वास्तव में सहरिया जनजाति के विषय में पूर्णतः स्पष्ट नहीं हो सका कि सहरिया कौन है कहाँ से आये और इनकी उत्पत्ति कैसे हुई। सहरिया परिवार मध्यप्रदेश के आठ जिलों (श्योपुर, शिवपुरी, मुरैना, गुना, ग्वालियर, विदिशा, दतिया और भिण्ड) के 2325 गावों में निवास करतें है।

सहरिया किशोरियों की स्वास्थ्य समस्याएँ एवं खान पान संबंधी गलत आदतें :– किशोरावस्था आवेग, जोश, संवेदनशीलता व उत्साह से भरपूर एक परिवर्तन की अवस्था है।

हरलॉक के अनुसार – ''किशोरावस्था समस्या बाहुल्य की अवस्था है।'' हरलॉक ने इस अवस्था को संक्रमण की अवस्था कहा है। आदिम जातियों व प्राचीन सभ्यताओं में तरूणावस्था और किशोरावस्था में कोई अन्तर नहीं था, जैसे ही बालक, बालिकाओं के शरीर का विकास पूर्ण हो जाता था उसमें संतान उत्पन्न करने की योग्यता का विकास हो जाता था, उसे व्यस्क या प्रौढ़ मान लिया जाता था। इसी कारण किशोरी बालिकायें आंतरिक रूप से परिपक्व नहीं हो पाती है जिसके परिणामस्वरूप वे उनसे उत्पन्न संतान कुपोषित व बीमारी से ग्रस्त होती है। सहरिया किशोरी बालिकाओं में खान–पान संबंधी गलत आदतें भी होती है जैसे– हरी सब्जियां अपने आहार में सम्मिलित न करना, दूध न पीना आदि इसके विपरित लगभग 10 में से 5 सहरिया किशोरी बालिकायें तम्बाकू का सेवन करना पसंद करती है।

सहरिया जनजाति की किशोरियों के खान–पान में पौष्टिक तत्व नहीं के बराबर होते हैं। गरीबी के कारण संतुलित आहार न मिलने के कारण अधिकांश सहरिया किशोरी बालिकायें कुपोषण की शिकार होती है। जनजातिय क्षेत्रों में मलेरिया, क्षयरोग, पीलिया, हैजा तथा अतिसार जैसी बीमारियाँ व्याप्त रहती है। लौहतत्व की कमी, एनीमिया, उच्च शिशु मृत्यु दर एवं जीवन प्रत्याशा का निम्न स्तर आदि समस्याएं कुपोषण से जुड़ी हुई है। कई शौध अध्ययनों के पश्चात् यह पता चलता है कि जड़ी–बूटी, वनस्पति आदि की सटीक जानकारी रखने वाला आज अपनी ही पहचान भूल गया। सरकार ने माना

कि सहरिया मूलतः एक अत्यन्त पिछड़ी जनजाति है जो अपने जीवन निर्वाह के लिए सतत संघर्षशील है। जिसके प्रत्यक्ष प्रभाव इनके जीवन व स्वास्थ्य पर देखे जा सकते हैं। महिलाऍं व किशोरी बालिकायें लौह तत्व की कमी, कुपोषण, एनीमिया आदि से ग्रस्त होती है। सहरिया किशोरी बालिकायें ऑगनवाड़ी द्वारा वितरित होने वाली आयरन, विटामिन–ए और फॉलिक एसिड की गोलियों की निर्धारित मात्रा नियमित रूप से गृहण नहीं करती जिसका मुख्य कारण एनीमिया के प्रति जागरूकता की कमी एवं झाड़–फूंक पर अंधविश्वास है। सहरिया किशोरी बालिकायें गुटखा, तम्बाकु का भी सेवन करती है जो कि उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

यह आलोचना नहीं सत्य है
सहरिया जनजाति मध्यप्रदेश की सबसे पिछड़ी हुई जनजाति है इस जनजाति के जीवन में भुखमरी, कुपोषण, रक्ताल्पता, खुजली, क्षयरोग जैसी बीमारियों का चक्रवात ठीक उसी तरह निरंतरता से आता है, जिस निरंतरता से व्यापक समाज में अष्टमी, नवमी और चतुर्दशी आती है। सहरिया आदिवासी को हर जगह भेदभाव और बहिष्कार का सामना करना पड़ता है क्योंकि अगर सहरिया हर रोज़ स्कूल जाएंगे तो किसी दिन इस व्यवस्था से निकल कर विकास कर लेगा और तब वह उच्च वर्गों का सहायक नही रह जायेगा। उॅची जाति के लोगों का विश्लेषण उॅचा होता है और यही कारण है कि सहरिया बार–बार पीछे धकेला जाता है।

निष्कर्ष
अतः हम कह सकते है कि 21 वीं सदी के इस दौर में आदिवासियों को हाशिए पर लाकर खड़ा कर दिया है। उन्हें उनके जल, जंगल, जमीन से हमने वंचित कर दिया है। आदिवासी क्षेत्रों में स्वास्थ्य संबंधी समस्या से निपटने के लिए अधिक से अधिक स्वास्थ्य केन्द्र खोले जाने चाहिए। सहरिया जनजाति की किशोरियों के आहार में सभी पौषक तत्व सम्मिलित हो इसके लिए उन्हें पोषण शिक्षा प्रदान करनी चाहिए एवं आगॅनवाड़ी केन्द्र से वितरित होने वाली विटामिन–ए, फॉलिक एसिड, आयरन की गोलियों का वितरण ही काफी नहीं अपितु किशोरियों को इन गोलियों को नियमित रूप से गृहण करने के लिए प्रोत्साहित करना भी उतना ही अनिवार्य है। सहरिया जनजाति को विकास की मूल धारा से जोड़कर उनका चहुमुखी विकास होना चाहिए।

संदर्भ

1. महिला सशक्तिकरणः चुनौतियॉ एवं समाधान, लेखक–डॉ. मुहम्मद नईम
2. भारतीय समाज, लेखक – डॉ. जगवीर सिंह
3. नारी शोषण : समस्याऍं एवं समाधान, लेखक– डॉ. राजकुमार
4. युवतियों का सही पोषण एवं खान–पान, लेखक– डॉ. विक्रम सिंह
5. जनजातिय समाजशास्त्र, लेखक – डॉ.श्रीनाथ शर्मा
6. परिवार और समाज, लेखक – डॉ.रामनाथ शर्मा
7. भारतीय समाज एवं संस्कृति, लेखक – डॉ.श्रीमती कमलेश महाजन, डॉ.धर्मवीर महाजन
8. यूनीफाइड समाजशास्त्र, लेखक– डॉ. धर्मवीर महाजन, डॉ. कमलेश महाजन